को कवर करता है। खाद्य अपव्यय और भोजन घाटे में कमी, रसायन और कचरे के पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन, रोकथाम, कटौती, रीसाइज़्लिंग और पुन: उपयोग के माध्यम से अपशिष्ट चीजों की कमी, सज़्त रिपोर्टिंग और निगरानी के माध्यम से स्थिरता अनुपालन का प्रोत्साहन, स्थिरता उन्मुख सार्वजनिक खरीदी को अपनाने, जागरूकता, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता, दीर्घकालिक पर्यटन और इन क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय समझौतों की कठोरता के साथ कार्यान्वयन का सुझाव देने के अलावा अक्षम जीवाश्म ईधन सज़्सिडी को तर्कसंगत बनाना। इससे नीति निर्माताओं को आर्थिक समृद्धि के प्रतिमान के प्रति एक विश्वसनीय रोडमैप तैयार करने में सक्षम होना बेहद मुश्किल होता है। जो कि पर्यावरण की दृष्टि से स्थाई और अंतर-पीढ़ीगत न्यायसंगत है। एसडीजी 12 एक करीबी सन्निकटन है और विषय पर दिशा तैयार करने में एक सराहनीय प्रयास है। इसलिए, एसडीजी 8 और 12 दोनों के एक साथ मिलकर कई मेरिट देख सकते हैं। मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य के लिए बहुआयामी टिकाऊ विकास के विचार के लिए महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक आवास के संरक्षण, प्रदूषण का मुकाबला करने, कृषि-जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तन का सामना करने के लिए कार्यों का संगम, एकीकरण और संगम है। एकीकरण के उनके दृष्टिकोण में एसडीजी ने 17 लक्ष्यों के विकास के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों को मजबूती से जोड़ा है। आर्थिक नीति बनाने के लिए सामाजिक रूप से संवेदनशील होना चाहिए। ज़्योंकि अच्छी तरह से विकसित और न्यायसंगत समाज आर्थिक विकास, समृद्धि और समस्त विकास के लिए सबसे अधिक ठोस पारिस्थितिक तंत्र प्रदान करता है। अर्थव्यवस्था और समाज एक ऐसे वातावरण में कामयाब हो सकता है जो कम से कम क्षतिग्रस्त और स्थाई रूप से शोषण किया जाता है। मानव एवं प्रकृति के बीच का आंतरिक संबंध का दर्शन पुराना है। यह समय का परीक्षण किया हुआ और अनंत है। मानव अस्तित्व प्रकृति से तैयार किए गए संसाधनों के बिना अमान्य है और आसपास के लोगों की कल्पना के बिना मानव चेतना शून्य है। एसडीजी को पाठ्यफ्म सुधार के एजेंडे के रूप में देखा जाता है। यह बहुस्तरीय दृष्टिकोण और सभी स्तरों पर स्थिरता प्रथाओं को अपनाने पर जोर देता है। संगोष्ठी में दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, संस्थान के महासचिव श्री अतुल जैन, केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन, केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, श्री के.एन.गोविंदाचार्य, डा. महेश चंद्र शर्मा, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव राममाधव, स्वदेशी जागरण मंच के अश्विनी महाजन, इंदिरागांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय ने भी अपने विचार रखे।